International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-04-2019; Accepted: 25-05-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 172-174

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों की वर्तमान् समय में प्रासंगिकता

अनामिका सिंह
एम0 एड् छात्रा झुनझुनवाला पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री कालेज फैजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारत भूमि प्राचीन काल से ही बहुत से महापुरुषों का जन्म स्थली रही है इसी श्रृंखला में स्वामी विवेकानंद का अवतरण भारत की पवित्र भूमि पर हुआ जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से भारत का मस्तक ऊंचा कर दिया स्वामी जी भारतीय धर्म दर्शन एवं संस्कृति के प्रवक्ता थे भारतीय धर्म एवं दर्शन को खोखला मानने वाले पाश्चात्य वासियों के समक्ष स्वामी जी ने सिद्ध किया कि भारतीय धर्म एवं दर्शन विष्व के संपूर्ण धर्म एवं दर्शन के आधार है।

जीवन परिचय

12 जनवरी सन् 1863 ईस्वी मकर संक्रांति के पुण्य पर्व के अवसर पर कोलकाता में विश्वनाथ दत्त की पत्नी भुनेश्वरी ने एक पुत्र को जन्म दिया यह पुत्र अनेक पूजा अर्चना के उपरांत हुआ था। सारा घर खुशियों से भर गया बालक के का नाम नरेंद्र रखा गया। घर का वातावरण अत्यंत धार्मिक था। बालक का नाम नरेंद्र रखा गया। बचपन से ही नरेंद्र ने रामायण और महाभारत के अनेक प्रसंग व भजन कीर्तन कंटेस्ट कर लिए थे। बालक नरेंद्र पर अपनी माता के सद्गुणों का विशेष प्रभाव पड़ा। इनके पिता पितामह ने भी 25 वर्ष की अवस्था में सन्यास ग्रहण कर लिया था, किंतु इन पारिवारिक प्रभाव से भी बढ़कर स्वामी विवेकानंद को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला कारण इनका श्री रामकृष्ण परमहंस का शिष्यत्व था। नरेंद्र की प्राथमिक शिक्षा घर पर ही हुई। इसके उपरांत वे विभिन्न स्थानों पर शिक्षा ग्रहण करने के लिए गये। कुश्ती, बॉक्सिंग, दौड़, घुड़दौड़ और तैराकी, व्यायाम उनके शौक थे। उनका स्वास्थ्य बहुत ही अच्छा था।

सुंदर व आकर्षण व्यक्तित्व के कारण लोग उन्हें देखते ही रह जाते थे। उन्होने बी0 ए0 तक शिक्षा प्राप्त की थी। स्वामी जी ने अपने जीवन के कुछ उद्देश्य निर्धारित किये, जिसमें पहला उद्देश्य धर्म की पुनर्स्थापना का था। उस समय भारत ही नहीं वरन् संपूर्ण विश्व में बुद्धिजीवियों के धर्म से श्रद्धा उठती जा रही थी। अतः आवश्यक था कि धर्म की ऐसी व्याख्या प्रस्तुत करना जो मानव जीवन को सुखमय बना सके। दूसरा उद्देष्य था हिन्दू धर्म और संस्कृति पर हिंदुओं की श्रद्धा जमाये रखना, जो यूरोप के प्रभाव में आते जा रहे थे। तीसरा उद्देश्य था भारतीयों को उनकी संस्कृति, इतिहास और आध्यात्मिक परंपराओं का योग्य उत्तराधिकारी बनाना। स्वामी जी की वाणी एवं विचारों से भारतीयों में यह विश्वास जागृत हुआ कि उन्हें किसी के सामने सिर झुकाने या लज्जित होने की आवश्यकता नहीं है। 11 सितंबर 1893 का यह दिन धार्मिक इतिहास में विशेष स्मरणीय रहेगा। क्योंकि इसी दिन शिकागो के धर्म सम्मेलन में स्वामी जी ने भारत के पुनः विश्व गुरु बनने का मार्ग प्रशस्त किया था। जहॉ सभी वक्ताओं ने अपने–अपने धर्म एवं ईश्वर की श्रेष्ठता सिद्ध करने की कोशिश की। वही स्वामी जी ने सभी धर्मों को एकाकार करते हुए घोशणा की, कि लड़ो नहीं, साथ चलो। खंडन नहीं, मिलो। विग्रह नहीं, समन्वय। और शांति के पथ पर बढ़ो। इस भाषण से उनकी ख्याति पूर्ण विश्व में फैल गयी।

4 जुलाई सन् 1902 ई0 को स्वामी जी का स्वर्गवास हो गया। किंतु वातावरण में आज भी उनके ये शब्द गूंज रहे है – शरीर को एक दिन जाना ही है फिर आलसियों की भांति क्यों जिया जाय। जंग लग कर मरने की अपेक्षा कुछ कर के मरना अच्छा है, उठों जागों और अपने अंतिम लक्ष्य की पूर्ति हेतु कर्म में लग जाओ।

धर्म एवं उसकी परिभाशा

धर्म बड़ा ही व्यापक शब्द है। इसे परिभाषित करना कठिन काम है। लोगों ने अपने – अपने दृष्टिकोण और अनुभव से धर्म की पृथक पृथक परिभाषाएं दी है। कुछ लोग धर्म का अर्थ केवल धार्मिक कर्मकांडों के निर्वाह से लगाते है। उनके अनुसार पूजा पाठ हवन, नवाज, रोजे आदि करने से धर्म का कर्तव्य पूरा हो जाता है। ईसाई संप्रदाय के अनुसार प्रेम सहानुभूति और पारस्परिक मधुर संबंधों के आधार पर मानव सेवा ही धर्म है। हिंदू धर्म के अनुसार धर्म की परिभाषा अति व्यापक है। धर्म धारण शब्द से बना है। जिसका अर्थ है कर्तव्य है। जिसे कर्त्तव्य रूप से अपनाया जाय। रिलीजन शब्द धर्म का पर्याय नहीं है। रिलीजर्न का अर्थ है आपस में बांधना। मुसलमानों के अनुसार धर्म का अर्थ है। आचार–विचार की षिक्षा। वे धर्म के लिए मजहब षब्द का प्रयोग करते है और इनके अनुसार नमाज, रोजे, हज करने से भाईचारा उत्पन्न होता है। कुछ लोग धर्म को समाज–सेवा मानते है और इसे सर्वोपरि कर्तव्य मानते हैं।

स्वामी जी धर्म, दर्शन एवं उनकी महत्व पर निम्नलिखित प्रकार से प्रकाश डालते हैं

स्वामी जी के दार्शनिक विचार

स्वामी जी के चिंतन के मूल में वेदान्त की शिक्षाएं थी। उन्होंने वेदांत को व्यवहारिक रूप देने के लिए अथक प्रयास किया। वे अद्वैत वेदांत के संदेश वाहक और मायावादी थे किंतु उनकी बुद्धि समन्वयकारी थी। वे वेदांत के तीनों रूपों–द्वैत, अद्वैत एवं विशिष्टाद्वैत में कोई अंतर नहीं समझते थे। उनके अनुसार ये तीनों वैदिक दर्शन के तीन सोपान है। जिन का अंतिम लक्ष्य अद्वैत की अनुभूति है अपितु इतना ही नहीं ये विश्व के सभी धर्मों को अद्वैत की ओर झुका हुआ मानते थे।

धर्म एवं उसकी आवश्यकता

स्वामी जी धर्म को व्यक्ति एवं राष्ट्र दोनों को ही शक्ति प्रदान करने वाला तत्व मानते थे। उनके अनुसार मेरे धर्म का सार शक्ति है जो धर्म हृदय में शक्ति का संचार नहीं करता, वह मेरी दृष्टि में धर्म नहीं है, चाहे वह उपनिषद का धर्म हो और गीता या भागवत का। शक्ति धर्म से भी बड़ी वस्तु है और शक्ति से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

वे धर्म के क्षेत्र से संकीर्णता एवं रूढ़िवादिता को समूल नष्ट कर देना चाहते थे। वे इस आधार पर सहमत नहीं थे कि धर्म अंधश्रद्धा का प्रश्न है जिसमें तर्क का कोई स्थान नहीं है। ये यहॉ तक कहते थे कि धर्म एक विज्ञान है। उनके अनुसार – धर्म आध्यात्मिक जगत के सत्यों से उसी प्रकार संबंधित है, जिस प्रकार भौतिक शास्त्र और रसायन शास्त्र भौतिक जगत के सत्यों से।

स्वामी जी ने धर्म समभाव की घोषणा की और 1898 ईसवी में यह विचार व्यक्त किया कि हमारी मातृभूमि के लिए दो महान प्रणालियों हिंदू धर्म एवं इस्लाम का का संगम ही एकमात्र आशा है।

हिंदू धर्म का सार्वभौमिक रूप

स्वामी जी ने हिंदू धर्म का समर्थन इस आधार पर किया कि वह नैतिक मानवतावाद और आध्यात्मिक आदर्शवाद का एक सार्वभौमिक प्रतिरूप है। हिंदू धर्म उन दुरूह पंथों, कर्मकांडी, अंधविश्वासों, परंपरागत मतवादों और कर्मकांडों का पुंज है। जिसको देखने के लिए यूरोपीय सदैव उत्सुक रहते है। अपितु हिंदू धर्म एक ऐसा व्यापक सत्य है जो न्याय, साख एवं वेदांत द्वारा अपने हृदय में गंभीर दार्शनिक प्रतिभा को सरर दे सकता है।

स्वामी जी कहते हैं कि प्राच्य एवं पाश्चात्य दुनिया में घूम कर मुझे कुछ

अभिज्ञता मिली और मैंने देखा सभी जातियों का अपना कोई न कोई आदर्श जरूर होता है। जिसे हम उस जाति का मेरुदंड कह सकते हैं। हमारी मातृभूमि का मेरुदंड धर्म है। धर्म के आधार पर हमारी जाति का जीवन प्रासाद खड़ा है। भारत का वायुमंडल धार्मिक आदर्श से बीसियों सदियों तक पूर्ण रहकर जगमगाता रहा है। हम इसी धार्मिक आदर्श में पैदा हुए और पले है। यहां तक कि वह अब हमारे रक्त में मिल गया है, वह हमारी शरीर की बनावट का अंश हमारी जीवन शक्ति बन गया है।

स्वामी जी यह कहते हुए असीम प्रसन्नता का अनुभव करते थे– पृथ्वी पर ऐसा कोई धर्म नहीं है, जो हिंदू धर्म के समान इतने उच्च स्वर से मानवता के गौरव का उपदेश देता है। पर उन्हें पीड़ा इस बात की थी कि पाखंडी पंडित एवं पुरोहितों ने धर्म के नाम पर स्वार्थ का विकास कर हिंदू धर्म को कलंकित कर दिया और उनके मुख से यह स्वर फूट पड़े थे – पृथ्वी पर ऐसा कोई धर्म नहीं जो हिंदू धर्म के समान गरीब और निम्न जातियों का गला ऐसी क्रूरता से घोटता है।

स्वामी जी के अनुसार हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य मानव मात्र के प्रति और सहानुभूति है। वे कहा करते थे – जब पड़ोसी भूख से मरता हो तब मंदिर में भोग लगाना पूर्ण नहीं पाप है। वास्तविक पूजा निर्धन एवं दरिद्र की पूजा है। रोगी और कमजोर की पूजा है। उन्होंने आगे कहा यदि व्यक्ति भूखा हो उसके आगे दर्शन एवं धर्म शास्त्र परोसना उसका मजाक उड़ाना है।

स्वामी जी ने शिक्षित समाज के लिए कहा था कि मैं ऐसे शिक्षित लोगों को दोषी मानता हूँ जो गरीब एवं भूखी जनता के पैसों से पड़कर उनके ऊपर ध्यान नहीं देते हैं वरन् उन्हीं का शोषण करते हैं।

स्वामी विवेकानन्द का षैक्षिक चिन्तन

स्वामी जी षिक्षा के द्वारा मनुश्य को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार करना चाहते थे। लौकिक दृश्टि से उन्होंने नारा दिया– हमें ऐसी षिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो एवं मनुश्य स्वालम्बी बने। पारलौकिक दृश्टि से उन्होंने घोशणा की – षिक्षा मनुश्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है। इनकी दृश्टि से षिक्षा ये दोनों कार्य करती है।

शिक्षा के उद्देश्य

स्वामी जी ने शिक्षा के जिन उद्देश्यों पर बल दिया उन्हें हम निम्नलिखित रूप में क्रमबद्ध कर सकते हैं।

1 **शारीरिक विकासः** स्वामी जी सफल भौतिक जीवन एवं आत्मनुभूति दोनों के लिए स्वस्थ शरीर को आवश्यक समझते थे। उनकी दृष्टि से शिक्षा द्वारा सर्वप्रथम मनुष्य का शारीरिक विकास किया जाना चाहिए।

2 **मानसिक एवं बौद्धिक विकासः** स्वामी जी ने भारत के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण उसके बौद्धिक पिछड़ेपन को बतलाया और इस बात पर बल दिया कि हमें अपने बच्चों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना चाहिए उसके लिए उन्हें आधुनिक ज्ञान–विज्ञान से परिचित कराना चाहिए ।

3 **समाज सेवा की भावना का विकासः** स्वामी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि पढ़ लिख लेने का अर्थ यह नहीं कि अपना ही भला किया जाय, मनुष्य को पढ़ लिख लेने के बाद मनुष्य मात्र की भलाई करनी चाहिए।

4 **नैतिक एवं चारित्रिक विकासः** स्वामी जी ने मनुष्य के बौद्धिक एवं शारीरिक विकास के साथ–साथ उसके चारित्रिक विकास पर विशेष बल दिया। चरित्र ही मनुष्य को सत्य निष्ठ एवं कर्तव्यनिष्ठ बनाता है। नैतिकता से तात्पर्य सामाजिक एवं धार्मिक दोनों से था और चारित्रिक विकास से तात्पर्य ऐसे आत्मबल के विकास से था जो मनुष्य को सत्य पर चलने में सहायक हो और असत्य मार्ग पर चलने से रोक।

5 **व्यवसायिक विकासः** स्वामी जी ने भारत की दलित जनता को बड़े ही निकट से देखा था। साथ ही पश्चात वैभवशाली जीवन को भी देखा था और इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि उन देशों ने भौतिक संपन्नता ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी के प्रयोग से प्राप्त की हो इसके लिए उन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य को उत्पादन एवं उद्योग कार्यों तथा अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षित करने पर बल दिया।

6 **राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बंधुत्व का विकासः** स्वामी जी के समय में हमारा देश अंग्रेजों के अधीन था। स्वामी जी ने अनुभव किया पराधीनता हीनता को जन्म देती है। और हीनता सारे दुखों का कारण हो अतः उन्होंने नवयुवकों का जागृत करते हुए कहा – तुम्हारा पहला कार्य देश को स्वतंत्र कराना होना चाहिए और इसके लिए जो भी बलिदान देना पड़े उसके लिए तैयार होना चाहिए। इन्होंने ऐसा शिक्षा पर पर बल दिया जो राष्ट्रीय चेतना को जागृत करें। परंतु वे संकीर्ण राष्ट्रीयता के हामी नहीं थे। वे विश्व बंधुत्व में विश्वास करते थे।

7 **धार्मिक एवं आध्यात्मिक विकासः** स्वामी जी का मत था कि मनुष्य का भौतिक विकास आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि में होना चाहिए और आध्यात्मिक विकास बौद्धिक विकास भौतिक विकास के आधार पर होना चाहिए और ऐसी तभी संभव है जब मनुष्य धर्म का पालन करें स्वामी जी की दृष्टि से धर्म वह है। जो हमें प्रेम सिखाता है द्वेश से बचाता है मानव मात्र की सेवा में प्रवृत्त करता है और मानव के शोषण से बचाता है और हमारे भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों विकास में सहायक होता है।

शिक्षा की परिचर्या

पाठ्यचर्या उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन होती है। स्वामी जी अपनी पाठशाला में शारीरिक विकास के लिए खेलकूद, व्यायाम और यौगिक क्रियाओं और मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए भाषा, कला, संगीत, इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित और विज्ञान को स्थान देने के लिए बल दिया। भाषा के संबंध में स्वामी जी का दृष्टिकोण बहुत ही व्यापक था। इनकी दृष्टि से अपने सामान्य जीवन के लिए मातृभाषा अपने धर्म को समझने के लिए संस्कृत भाषा और देश को समझने के लिए प्रादेशिक भाषाओं और विदेशी ज्ञान एवं तकनीकी को समझने के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान आवश्यक है।

शिक्षण विधियां

स्वामी जी ने भौतिक ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष अनुकरण, व्याख्यान, निर्देशन, विचार–विमर्श और प्रयोग विधियों का समर्थन किया। आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए स्वाध्याय, मनन, ध्यान और योग विधियों का समर्थन किया। स्वामी जी दोनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने में योग विधि को सर्वोत्तम मानते थे। स्वामी जी किसी ज्ञान को रख लेने या मस्तिष्क में ठूस लेने को उचित नहीं मानते थे। बल्कि ज्ञान के अभाव को ग्रहण करके उसे जीवन में उतारने को उचित मानते थे। स्वामी जी के शब्दों में तुम केवल पॉच परखे हुए विचार आत्मसात् कर उसके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हो, तो तुम पूरे ग्रंथालय कंठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हो।

अनुशासन

स्वामी जी जीवन के तीनों पक्षों सामाजिक, प्राकृतिक एवं अध्यात्मिक को महत्व देते थे। स्वामी जी के अनुसार जब कोई प्राकृतिक स्व से प्रेरित होकर कार्य करता है। तो हम उसे अनुशासित नहीं कह सकते हैं। जब वह अपने प्राकृतिक स्व पर संयम रखकर सामाजिक स्वर से प्रेरित होता है तो उसे हम अनुशासित कर सकते है। परंतु वास्तव में अनुशासित वह होता है जो आत्मा से प्रेरित होकर कार्य करता है। अब प्रश्न उठता है उठता है कि बच्चे आत्म आत्मानुशासन मैं कैसे आ सकते हैं। उस संबंध में स्वामी जी का अपना मत था कि जब शिक्षक शिक्षार्थियों के सामने अनुशासन का उच्च आदर्श प्रस्तुत करेंगे बच्चे उनका अनुकरण करेंगे।

शिक्षक

स्वामी जी की दृष्टि से शिक्षक को भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान होना चाहिए। जिससे वे बच्चों को अलौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार कर सके। वे शिक्षक को संयमी और आत्म ज्ञानी होने का उपदेश देते थे। तभी तो बच्चे उनका अनुकरण करके आत्मज्ञानी एवं संयमी बना सकेंगे।

शिक्षार्थी

स्वामी जी के अनुसार भौतिक एवं आध्यात्मिक किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षार्थी ब्रह्मचर्य का पालन करें। उनका मत था कि शिक्षार्थी जब तक इंद्रियों का निग्रह नहीं करते, उन में सीखने की प्रबल इच्छा उत्पन्न नहीं होती और वे गुरु में श्रद्धा रखकर सत्य जानने का प्रयास नहीं करते तब तक वह न भौतिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं न आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

विद्यालय

स्वामी जी गुरु ग्रह के हामी थे। वे चाहते थे कि विद्यालयों का पर्यावरण शुद्ध हो और वहां खेलकूद, व्यायाम, अध्ययन–अध्यापन और इन सबके साथ–साथ समाज सेवा, भजन–कीर्तन एवं ध्यान की क्रियाएं संपादित हो।

विवेकानंद का प्रभाव

विवेकानंद जी जहां एक और अपने देशवासियों को पाश्चात्य ज्ञान का लाभ उठाने की ओर प्रवृत्त किया और दूसरी पाश्चात्य वासियों को भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान से परिचित करवाया, विशेषकर वेदांत से। आज पूरे भूमंडल में भारतीय अध्यात्म एवं पाश्चात्य विज्ञान एवं तकनीकी का प्रयोग हो रहा है। आज ज्ञान किसी एक देश की बपौती नहीं है वरन् संपूर्ण विश्व की संपूर्ण संपत्ति है। आधुनिक समय में शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित पाश्चात्य एवं प्राच्च का समन्वय में उनके चिंतन का प्रभाव है।

निष्कर्ष

विवेकानंद पहले भारतीय थे। जिन्होंने अपने देश की आध्यात्मिक श्रेष्ठता और पाश्चात्य की भौतिक श्रेष्ठता से परिचित करवाया। उन्होंने उद्घोष किया कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करो। उसे स्वावलंबी बनाओ, आत्मनिर्भर बनाओ, स्वाभिमानी बनाओ और इन सब के ऊपर एक सच्चा मनुष्य बनाओ जो मानव सेवा के द्वारा ईश्वर प्राप्ति में सफल हो। स्वामी जी के शैक्षिक विचार भारतीय धर्म और दर्शन पर आधारित है जो भारतीय जन–जीवन के अनुकूल है। राष्ट्रीय शिक्षा योजना बनाने वाले को उनका प्रयोग करना चाहिए।

सुझाव

आज समाज में जब चारों ओर अराजकता का वातावरण विद्यमान है। उच्च पदों पर आसीन बड़े–बड़े राजनेता एवं प्रशासनिक अधिकारी जेल जाना तीर्थयात्रा समझ रहे हैं। उनका नैतिक एवं चारित्रिक पतन हो रहा है। उनकी अवैध संतानों अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है। समाज में मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। भौतिकवाद ने लोगों को अंधा बना दिया है। नेता तो मानसिक रूप से अपंग हो गये है। वे स्वामी की तुलना में आंतकवादियों से करने लगे है।

इन सब बुराइयों से निजात पाने के लिए हमें बौद्धिक विकास के साथ–साथ लोगों के निर्मल हृदय का विकास करना पड़ेगा। जिसका विकास स्वामी जी द्वारा बतलायी गयी नैतिक, धार्मिक, चारित्रिक, सामाजिक एवं मूल्य परक षिक्षा को अपनाने से होगा।

आज षिक्षक भी अपनी गरिमा के अनुरूप अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह कही कर पा रहे है। षिक्षकों को संयमी एवं अपने अच्छे आचरण के द्वारा बच्चों को षिक्षा देनी चाहिए। जिसका प्रभाव अमिट होता है।

विधार्थियो को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। बिना ब्रह्मचर्य का पालन किये वे सभी इन्द्रियों पर नियन्त्रण की क्षमता नहीं अर्जित कर सकते है और ना ही अपने व्यक्तित्व का सर्वागींण विकास कर सकते है।

आज के विद्यालय का पर्यावरण षुद्ध होना चाहिए। विद्यालयों में ऊॅच–नीच एवं जाति–पाति की भावना नहीं होनी चाहिए। प्राचीन काल में जिस तरह से एक निर्धन का बेटा एवं राजा के बेटे साथ–साथ पढ़ते थे। उसी तरह से आज भी षासकों, प्रषासकों एवं गरीब जनता को साथ पढ़ना चाहिए।

संदर्भ सूची

1 विवेकानंद, स्वामी, द कम्पलीट वर्क्स स्वामी विवेकानंद इन 8 वाल्यूम्स – फिफ्थ रिप्रिंट ऑफ सब्सीडाइज्ड एडीसन, एडवेथा आश्रम, मायावथी, यू0पी0, 1992.

2 ई, इग्नर, रॉबर्ड, बरट्रांड रूसेल्स बेस्ट जार्ज एलेन एंड उनवीन लिमिटेड, 1975

3 गुप्ता, महेन्द्रनाथ, द गोस्पल ऑफ श्री रामाकृश्णा, एडवेथा आश्रम, मायावथी, यू0पी0, 1993.

4 चेतनांनद स्वामी, मेडीटेषन एण्ड इट्स मैथेड्स, एडवेथा आश्रम, मायावथी, यू0पी0, 1976.

5 ईस्टन एंण्ड वेस्टर्न डिसीपिल्स, द लाइफ आफ स्वामी विवेकानंद, एडवेथा आश्रम, मायावथी, यू0पी0, 1998.

6 लाल, प्रो रमन बिहारी, षिक्षा के दार्षनिक एवं समाजषास्त्रीय सिंद्धात।

7 पाण्डेय, डॉ राम सकल, षिक्षा की दार्षनिक एवं समाजषास्त्रीय पृश्ठभूमि।